क्या विकासवाद की शिक्षा विश्वासयोग्य है?

> हे तीमुथियुस इस थाती की रखवाली कर और जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, उसके अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से परे रह। कितने इस ज्ञान का अंगीकार करके, विश्वास से भटक गए हैं ... (1 तीमुथियुस 6:20, 21)।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर जानता था कि मसीही लोगों को भरमाने के लिए विश्वास का नाश करने वाली शिक्षाएं फूट निकलेंगी। वह यह भी जानता था कि वे शिक्षाएं, जो ज्यादातर सुयुक्तिपूर्ण परन्तु कपटपूर्ण हैं, ''वैज्ञानिक'' वस्त्र पहनकर घूमेंगी और ''व्यर्थ घमण्ड की बातें'' मुंह से निकालेंगी (2 पतरस 2:18)। इस कारण पिता ने सदा तक रहने वाली पुस्तक में अपने बच्चों को ''अशुद्ध बकवाद जिसे झूठ मूठ का ज्ञान कहा जाता है, के विरोध की बातों से'' सावधान रहने को कहा।

मसीही लोग वास्तविक विज्ञान का विरोध नहीं करते। सच्चा विज्ञान परमेश्वर की ओर से ही है, क्योंकि विज्ञान तो ज्ञान ही है। परमेश्वर और उसके मसीह में ''बुद्धि और *ज्ञान* के सारे भण्डार छिपे हुए हैं'' (कुलुस्सियों 2:3)। प्रकृति में परमेश्वर का ज्ञान हमेशा प्रकाशन (पवित्र बाइबल) से सहमत होगा अर्थात उनमें कोई विरोधाभास नहीं हो सकता। प्रकृति के विषय में मनुष्य के अनुमान परमेश्वर के प्रकाशन के विपरीत हो सकते हैं, परन्तु विश्वासी मसीहियों को चाहिए कि वे सच्चे विज्ञान से मनुष्यों के अनुमानों को हमेशा अलग रखें। मनुष्य जो कुछ जानता है वह उससे भिन्न हो सकता है जो उसे लगता है कि वह जानता है, और यीशु के चेले मनुष्य के विचारों के कारण बाइबल को त्यागने वाले नहीं हैं।

मसीही लोगों पर बहुत बार पूर्वाग्रही और विज्ञान के प्रति ईमानदार नहीं होने का आरोप लगाया जाता है, जो कि गलत है। यदि यह आरोप सही भी हो, तो विकासवादियों पर भी यही आरोप बनता है। उनमें से ही एक ने विकासवाद को, पूर्वाग्रही व्यक्ति को संतुष्ट करने के लिए प्रकृति में पर्याप्त तथ्यों की खोज किए बिना ''प्रमाणित'' करने की जानकारी को झूठा ठहराया था। अर्नस्ट हेकल ने ''न केवल भ्रूणों के उदाहरणों को झूठा ठहराया था बल्कि उनके मूल नामों को भी बदलकर और नाम दे दिए थे, जिस कारण प्रोफेसर एंटेन हिज़ को यह कहना पड़ा था कि हेकल झूठ बोल रहा है। 'मैं सही ज्ञान से, जो सीधे प्राप्त किया गया

है यह आरोप लगा सकता हूं, [प्रोफेसर अरनोल्ड ब्रास] ने कहा था, क्योंकि मैंने स्वयं हेकल के लिए वास्तविक चित्र बनाए थे।' "[1] गड़बड़ करते पकड़े गए इस तथाकथित वैज्ञानिक ने स्वयं माना, "मैं एकदम पश्चात्तापी अंगीकार से आरम्भ करता हूं कि मेरे कुछ चित्र सचमुच छद्म हैं... ।"[2] निश्चय ही बाइबल के विश्वासियों ने अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए झूठ का सहारा नहीं लिया क्योंकि सच्चाई को किसी ऐसे समर्थन की आवश्यकता नहीं पड़ती है और न ही पड़ेगी।

परन्तु, विकासवाद की शिक्षा को सहारे के लिए इस्तेमाल की गई चालाकी से परेशानी ही नहीं है। इसके उपासकों द्वारा विकासवाद की थ्योरी पर विश्वास करने के क्या कारण हैं ? जब मसीही लोग यह कहते हैं कि उन्हें विकासवादियों के किसी भी बड़े से बड़े प्रमाण का भय नहीं है तो वे डींग नहीं मार रहे होते, क्योंकि यही सच्चाई है। यदि विकासवाद में सच्चाई होती (जो कि है नहीं) तो मसीही लोगों को इससे लड़ने का कोई लाभ न होता।

सबसे मज़बूत प्रमाण

(1) *अनुरूपताएं।* विकासवाद के लिए सबसे अधिक प्रचलित तर्क है कि, "तुम्हें मनुष्य और बन्दर में समानता दिखाई नहीं देती ?" यदि इससे यह प्रमाणित होता है कि मनुष्य बन्दर से विकसित हुआ है, तो इससे यह भी प्रमाणित होना चाहिए कि केडिलेक गाड़ी फोर्ड से विकसित हुई है, क्योंकि दोनों में चौंकाने वाली समानताएं हैं। मनुष्य और जानवरों में थोड़ी बहुत समानताएं हैं और अधिक तर्कपूर्ण ढंग से कहा जाए तो, इसका अर्थ है कि "इससे यह पता चलता है कि सबको एक ही महान परमेश्वर ने बनाया है।"

(2) *पुनरावर्तन।* कई लोग अभी भी इस विचार को मानते हैं कि मानवीय भ्रूण नौ माह के गर्भकाल में विकासवादी इतिहास के लाखों वर्षों का "पुनरावर्तन है" अर्थात यह मछली से रेंगने वाले जीव और उससे एक पक्षी और फिर एक स्तनधारी जीव में बदलता है। यह सब तो केवल अनुमान है और उपहासजनक लगता है क्योंकि (क) माना जाता है कि, "पुनरावर्तन" का नियम पौधों पर लागू नहीं होता, जिनके पूर्वज उसी वंश के माने जाते हैं, और (ख) बन्दर के भ्रूण की खोपड़ी बन्दर से अधिक मनुष्य की खोपड़ी से मेल खाती है, जिसका अर्थ यह होगा ("पुनरावर्तन" के अनुसार) कि बन्दर मनुष्य बन जाता है और फिर मनुष्य बन्दर में बदल जाता है।

(3) *रक्त परीक्षण।* खून की जांच की मूर्खता इस तथ्य में दिखाई देती है कि चौंतीस लोगों पर किए परीक्षण से "स्पष्ट रूप से" केवल सात, और तीन "मध्यवर्ती" मनुष्य प्रमाणित हुए।[3] फिर, जांच परिणामों से आठ बन्दरों में पूरी तरह से इन्सानी खून होने का पता चला। इस प्रकार, यदि ये परीक्षण विश्वसनीय हैं, तो बन्दर मनुष्यों से अधिक इन्सान हुए! ऐसे ही रक्त परीक्षणों से संकेत मिला है कि सूअर का निकटतम प्राणी व्हेल मछली है, जबकि उन्हीं परीक्षणों से यह थी पता चला कि व्हेल का सबसे निकटतम सम्बन्धी चमगादड़ है।

(4) *अभिजनकों की पैदावार।* बेशक अभिजनकों (ब्रीडिंग करने वालों) ने मांस और दूध देने वाले जानवरों के साथ-साथ काम करने वाले बढ़िया नस्ल के और रेस वाले

घोड़े तो विकसित कर लिए हैं, परन्तु वे घोड़ों या जानवरों से बढ़कर कोई और चीज अर्थात कोई नया जन्तु तैयार नहीं कर पाए। घोड़ों की नस्ल से घोड़े ही पैदा होंगे कोई दूसरा जानवर नहीं। लोगों ने लगभग दो सदियों तक बहुत कोशिश की है, जो विकासवाद के विरुद्ध ही रही है। क्योंकि अप्राकृतिक ढंग से तैयार किए जानवर से कोई नया जानवर पैदा नहीं हो सकता, इसलिए बिना अगुआई और बिना समझ के विकासवाद कैसे हो सकता था? घोड़ों की बात करते हुए, विकासवादियों के मार्ग में हठी बूढ़ा खच्चर ढीठ होकर खड़ा है। एक जैसी दो प्रजातियों को मिलाकर अर्थात घोड़े और गधे के मिश्रण से दोगली नस्ल अर्थात खच्चर तो पैदा हो जाता है। परन्तु, खच्चर की संतान उसी से दोबारा पैदा नहीं की जा सकती। इस प्रकार कोई नया जन्तु नहीं बन सका। पूरी प्रकृति ही खच्चर की तरह हठी है क्योंकि वह वैज्ञानिकों के नये अनुमानों की पैदावार के अनुसार बदलने से इन्कार करती है।

(5) *अवशेषी अंग।* मनुष्य की अपेंडिक्स, उसकी शंकुरूप [पाइनियल] ग्रंथी, और गले की नली के पास की ग्रंथियों को विकासवादियों द्वारा विकसित हो रही देह के पूर्व अंगों के सूख चुके अवशेषों के रूप में माना जाता है। क्योंकि वे उन अंगों के किसी लाभकारी उद्देश्य से अवगत नहीं थे, और विकासवाद को प्रमाणित करने के लिए उतावले थे, इसलिए उन्होंने विश्वास दिलाने वाला लेकिन कपटपूर्ण अनुमान लगाया। अब सच्चा विज्ञान उन अंगों के परमेश्वर द्वारा दिए गए उद्देश्यों को एक-एक करके खोज रहा है। गले की नली का छिपाव जो मुख्यत: आयोडीन से बनता है, स्वास्थ्य के लिए बहुत ही आवश्यक माना गया है। विज्ञान अब शंकुरूप ग्रंथी को तीसरी आंख होने के बजाय, शरीर के विकास को नियंत्रित करने वाली ग्रंथी के रूप में जानता है।[4] यहां तक कि जॉन हॉपकिंस यूनिवर्सिटी के डॉक्टर हॉवर्ड ए. कैली, ने अपेंडिक्स को महत्वपूर्ण अंग कहा है: "यह छिपाव तथा अवशोषण के लिए आंतों के आधार को बढ़ाता है।"[5]

(6) *कंकाल।* चट्टानों में पशुओं की हड्डियों के कंकालों और उनकी आकृतियों से बहुत से लोगों ने विकासवाद को प्रमाणित करने की कोशिश की है। परन्तु वे कंकाल तो पूरी तरह से विकसित रूप में हैं अर्थात कोई जोड़ने वाली कड़ियां नहीं, न तो वे अर्ध बिल्लियां हैं और न ही अर्ध कुत्ते अर्थात उनमें कुछ भी आधा नहीं है। वे कंकाल इस बात की गवाही देते हैं कि आज की तरह ही प्रजनन पहले भी था अर्थात प्रत्येक जीव अपनी ही नस्ल के अनुसार बढ़ता है।

(7) *पांच पांवों वाला घोड़ा।* लगभग भेड़ के आकार के घोड़े की तरह कुछ हड्डियां मिलने के कारण जिसके पांच पांव हैं बहुत से लोगों ने निष्कर्ष निकाला है कि उनके पास आधुनिक विशाल घोड़े के विकास का नमूना है। उन्हें कैसे पता चला कि घोड़ा किसी छोटे जानवर से विकसित हुआ? वे कैसे जानते हैं कि छोटे जानवर के अलावा बड़ा जानवर नहीं होता था?

(8) *खोई हुई कड़ियां।* नास्तिक लोग बहुत बार विकासवाद के श्रद्धालु संसार को बताते हैं कि उन्होंने बन्दर और मनुष्य के बीच की कड़ी को खोज लिया है। जर्मनी में हज़ार वर्ष पहले रहने वाले आधे बन्दर और आधे मनुष्य, प्रसिद्ध नियेन्डरथल जाति के लोगों का

इतिहास बताती एक खोपड़ी मिली है। पूर्वाग्रही विकासवादी यह नहीं बताते कि आज भी ऐसे मनुष्य हैं जिनकी खोपड़ियां ऐसी हैं। प्रसिद्ध जावा मनुष्य को व्यापक प्रसिद्धि देने के लिए *Pithecanthropus erectus* (''वानर-मानव बनाना'') का नाम दिया गया था क्योंकि उन्हें उसकी खोपड़ी का एक भाग, दो दांत और एक जांघ की हड्डी मिली थी। वैज्ञानिकों को अब पता चल गया है कि वह जांघ की हड्डी और एक दांत किसी मनुष्य का है जबकि खोपड़ी और दूसरा दांत (जो लगभग पचास फुट दूर मिला) किसी बन्दर का है। हड्डियों को इस प्रकार से मिलाकर, जैसे किसी मुर्गे के पिन्जर पर मनुष्य की खोपड़ी रखकर, कोई यह ''प्रमाणित'' कर सकता है कि मुर्गे का आधा भाग इन्सान का होता था। ऐसा ही इंग्लैंड में मिली चिम्पेंज़ी और मनुष्यों की कुछ हड्डियों के साथ हो रहा है; दोनों को मिलाकर, इन हड्डियों से एक ऐसा ढांचा बन गया जिसे विकासवादी लोग *eoanthropus* कहते हैं।

विसंगतियां

जब कोई मसीही कहता है कि मसीह मृतकों में से जी उठा, तो बहुत से विकासवादी हंसकर कहते हैं, ''बेतुकी बात है! यह तो प्रकृति के नियम के विरुद्ध है।'' परन्तु उन्हें यह विश्वास करना बेतुका नहीं लगता कि घड़ियाल की त्वचा पंख बन सकती है। उनके लिए यह विश्वास करना भी कठिन नहीं है कि एक मेंढक का ठण्डा लहू मुर्गे का गर्म लहू बन सकता है। कितनी आसानी से वे कह देते हैं कि कछुए का दायां पांव बदलकर लाल पक्षी का पंख बन गया।

कुछ सम्भावित परिवर्तनों का असम्भव होना हर एक को स्पष्ट होना चाहिए। उदाहरण के लिए, मछली के पृथ्वी के जन्तुओं में परिवर्तित होने में सम्भवत: अण्डे देने में भी परिवर्तन हुआ। समुद्र में अण्डे काफी कठोर होते थे तरल नहीं, परन्तु बाद में समुद्र से उन्हें तरल मिल जाता था। पृथ्वी पर, अण्डों को एक छिलके में बन्द होना था। इस छिलके में अण्डे की सफेदी से पानी निकलने के लिए एसिड, भ्रूण के शरीर से मल आदि सम्भालने के लिए जल और उस मल को रखने के लिए एक हौज का होना आवश्यक है। फिर, उस कठोर छिलके को तोड़ने के लिए भ्रूण में एक चोंच विकसित करना ज़रूरी था। यह सब वास्तव में रातों रात ही हो जाना चाहिए था वरना नया बना जन्तु जीवित नहीं रह सकता था![6] क्या इससे लगता है कि विकास लाखों वर्षों में धीरे-धीरे हुआ होगा?

विकासवाद की बात मानें तो हज़ारों वर्ष तक व्हेल के स्तन के आस-पास एक थैली विकसित होने तक ''जो बच्चे के थूथन पर इतनी कस कर फिट हो जाती है और दूध के साथ नमक वाला पानी जाने से रोकती'' है, व्हेल का बच्चा दूध के स्थान पर क्या पीता?[7] व्हेल के बच्चों को दूध पिलाने में कितना समय लग सकता था?

यदि स्तनधारी जन्तु रेंगने वाले जन्तुओं से विकसित हुए, तो मां और बच्चे इकट्ठे ही, एक ही पीढ़ी में अर्थात बच्चे के पोषण के स्तनधारी ढंग से विकसित होने चाहिए थे। मां के स्तनों के साथ ही बच्चे के कोमल और हृष्ट-पुष्ट होंठ विकसित होने चाहिए थे।

यदि ऊपर दिए गए उदाहरणों में विकासवाद के अनुमान के बेतुकेपन को दिखाने में

कोई कमी रह गई है, तो इस बात पर विचार कीजिए। विकासवाद कहता है कि एकमात्र सिद्ध मनुष्य, स्वार्थ की छाया से भी दूर, मनुष्य के लिए सबसे बड़ी आशीष, यीशु किसी बन्दर का वंश है!

विरोध में तथ्य

मनुष्य ने पशुओं की लगभग 9 लाख प्रजातियों व 30 लाख नस्लों की खोज की है और उनमें से हर एक ''अपनी ही नस्ल के अनुसार'' बढ़ रहा है। गवाहों का यह कितना बड़ा बादल है![8] वे सब वही कर रहे हैं जो सर्वशक्तिमान के आदेश से मूसा ने कहा था: *''फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से एक एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात घरेलू पशु, और रेंगने वाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु, जाति जाति के अनुसार उत्पन्न हों; और वैसा ही हो गया''* (उत्पत्ति 1:24)। प्रकृति विकासवाद को झूठा तो ठहराती ही है परन्तु हर दिन लाखों तरह से जीवाणुओं से लेकर व्हेलों तक के द्वारा यह भी कहती है कि मूसा ने सच कहा था।

विकासवाद के विरुद्ध एक और बड़ा तथ्य स्वयं मनुष्य है। मनुष्य को पशुओं की श्रेणी में रखना उचित नहीं है। केवल शारीरिक रूप अर्थात उसका निम्न से निम्न रूप थोड़ा-बहुत बन्दर जैसा लगता है। मनुष्य में तो देह, प्राण और आत्मा तीन वस्तुएं पाई जाती हैं। उसकी आत्मा उसके शरीर की तरह ही एक तथ्य है और तथ्य बदलते नहीं हैं। मानसिक तौर पर, मनुष्य जानवरों से कदापि मेल नहीं खाता। जब कोई बन्दर एंपायर स्टेट बिल्डिंग या *क्वीन मेरी* जैसा कोई जहाज बना लेगा तब उसके दिमाग़ की तुलना इन्सान से की जा सकेगी।

जानवर कभी उन्नत्ति नहीं करते हैं; वे आज भी उन्हीं पेड़ों के नीचे रहते हैं और वही करते आ रहे हैं जो सदियों पहले करते थे। पृथ्वी पर केवल मनुष्य ही ऐसा जीव है जो विकास करता है। मनुष्य के पास बोलने की शक्ति है, ''प्रोफेसर मैक्स मुल्लर भाषाओं पर अपनी पुस्तक में हमें बताते हैं कि यह एक 'ऐसा गुण है जिसे कोई जानवर पा नहीं सकता।'''[9] कभी किसी गोरिल्ले को हत्या करने की कोशिश में गिरफ्तार नहीं किया गया, क्योंकि हम जानते हैं कि वह इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को जो विवेक, नैतिकता, सही और गलत का ज्ञान दिया है, वह उसमें नहीं है। ये गुण केवल मनुष्य में ही पाए जाते हैं। यह उसी प्रकार एक तथ्य है जैसे यह तथ्य कि उसके दो पांव हैं। और यह बात तय है कि उसे ये गुण किसी गोरिल्ला या किसी और जानवर से नहीं मिले, क्योंकि उनमें ऐसे गुण नहीं हैं। *मनुष्य को जानवरों की श्रेणी में नहीं लाया जाना चाहिए।* जैसे आकाश पृथ्वी से ऊंचा है, वैसे ही मनुष्य जानवरों से। कोई जानवर विनम्र होकर अपने से बड़ी शक्ति के आगे नहीं झुकता क्योंकि उसे पता ही नहीं है कि आराधना क्या है। मनुष्य झुकता है अर्थात सभी मनुष्य आराधना करते हैं। हर व्यक्ति किसी न किसी की आराधना करता ही है, लेकिन कोई जानवर किसी की आराधना नहीं करता है। यह एक तथ्य है, जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता; और उतनी ही निश्चित यह बात है कि मनुष्य को आराधना करने की योग्यता किसी वानर पिता से नहीं मिली। हां, मनुष्य कार्बन, सोडियम, हाईड्रोजन तथा अन्य रासायनिक तत्वों के मेल से बना है, लेकिन वह तो उसका सबसे निम्न

अर्थात भौतिक भाग है। मनुष्य में इससे बढ़कर कुछ है और उस ''बढ़कर'' की व्याख्या उत्पत्ति 2 से अधिक अच्छी तरह नहीं दी जा सकती है कि: ''परमेश्वर ने ... उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया'' (उत्पत्ति 2:7)।

इसके परिणाम

विकासवाद जीवन के उद्देश्य को ही खत्म कर देता है। यदि मनुष्य में आत्मा नहीं है तो कोई पुनरुत्थान या स्वर्ग भी नहीं है। बिना स्वर्ग के, आप कितना भी बड़ा बलिदान क्यों न कर दें, दूसरों की सहायता के लिए कितना भी परिश्रम क्यों न करें आपको एक सूअर से अधिक प्रतिफल नहीं मिलेगा। यदि नरक नहीं है, तो चाहे कितना भी बुरा क्यों न बन जाए यहां तक कि जानवरों की हरकतें ही क्यों न करें, उसके लिए कोई दण्ड नहीं होगा। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के बिना जीवन व्यर्थ हो जाएगा। यदि उम्मीद का तारा दिखाई न दे और सुनने वाला प्रेम पंख की सरसर को न सुन सके तो मनुष्य, सब प्रकार के जीवों से अधिक दयनीय हो जाए।[10] यदि विकासवाद की थ्योरी सही है, तो जीवन व्यर्थ है और विकासवाद का ईश्वर जिसने हमें बनाया, हमसे व्यंग्य करता और हमें आशा देकर निराशा दिलाता है अर्थात वह हमें जीवन का अर्थ बताकर इसका स्वाद प्रदान करता है, हमारे अन्दर सदा तक जीवित रहने की आशा उत्पन्न करता है और फिर हमें झटककर एक गाय के भाग्य में फेंक देता है। विकासवाद का आशा दिलाने वाला संदेश यही है।

विकासवाद यीशु को झूठा और गलत ठहराता है। क्या तत्व/पदार्थ की व्याख्या इतनी मज़बूत है? नहीं, क्योंकि जैसे ही लोगों को मसीहियत और विकासवाद के बीच हस्तक्षेप करती बड़ी खाई दिखाई देने लगती है, विकासवाद की पकड़ ढीली पड़ने लगती है। यीशु उत्पत्ति की पुस्तक में विश्वास रखता था और उसने इसमें से उद्धृत किया (देखिए उत्पत्ति 2:25; मत्ती 19:5; मरकुस 10:7)। विकासवादी लोग उत्पत्ति की पुस्तक को सच नहीं मानते। इस प्रकार उत्पत्ति की पुस्तक पर विश्वास न करने का अर्थ यीशु को नकारना ही है। मूसा को नकारकर यीशु का अनुयायी बनना असम्भव है, क्योंकि यीशु ने कहा था, *''यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिए कि उस ने मेरे विषय में लिखा है। परन्तु यदि तुम उस की लिखी हुई बातों की प्रतीति नहीं करते, तो मेरी बातों की क्योंकर प्रतीति करोगे?''* (यूहन्ना 5:46, 47)।

यदि मनुष्य केवल पशु ही है, तो यीशु की मृत्यु न केवल शर्मिंदगी, बल्कि मूर्खता भी थी, क्योंकि छुटकारे की आवश्यकता पशुओं को नहीं है। इस बात में, सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध ढंग से यीशु का जीवन, दुख सहने और सब लोगों के पापों के लिए मरने हेतु उसका यरूशलेम में जाना, सब व्यर्थ था। यदि विकासवाद की शिक्षाएं सत्य हैं तो मनुष्य तनिक भी पापी नहीं है और कोई नरक भी नहीं है जिससे उसे बचाने की आवश्यकता हो। विकासवाद के परिणाम इतने गंभीर और दूर तक प्रभाव करने वाले हैं कि यीशु और विकासवाद के द्वारा भी आराधना करने का दावा नहीं किया जा सकता।

यह जाता रहेगा

कुछ ही वर्षों में यह वहम, जिसे गलती से ''विज्ञान'' कहा जाता है दूसरे कई अनुमानों के साथ कल की बात बन जाएगा। वैज्ञानिक थ्योरियां और अनुमान बदलते रहते हैं। जो आज पाठ्य पुस्तक है कल उस पर लोग हंसेंगे। परमेश्वर की पुस्तक के विरोध में सब अनुमान घास के फूल की तरह हैं: ''घास सूख जाती है और फूल झड़ जाता है। परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा'' (1 पतरस 1:24ख, 25क)।

पाद टिप्पणियां

[1]अल्फ्रेड डब्ल्यू. मेक्कैन, *गॉड-ऑर गोरिल्ला* (न्यूयॉर्क: डेविन-अडेयर कं., 1925), 154-55. [2]डगलस डेवर, *डिफिकल्टीज़ ऑफ़ द इवोल्यूशन थ्योरी* (लंडन: एड्वर्ड अर्नाल्ड एण्ड कं., 1931), 39 में उद्धृत किया गया। [3]वहीं, 31. [4]*ओलिफ़ैंट-स्मिथ डिबेट* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1952), 128. [5]वहीं, 132. [6]डेवर, 68-69. [7]वहीं, 86. [8]डब्ल्यू. डब्ल्यू. ओटे, *क्रिएशन ऑर इवोल्यूशन* (ऑस्टिन: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग कं., 1930), 110 से लिया गया। [9]ई. एम. रॉबर्ट्स द *मिस्टरी ऑफ़ लाइफ़* (सेंट लुइस: पब्लिसिटी सर्विस कं., 1933), 511 से लिया गया। [10]रूपान्तरित।